श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ ३ ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥ ४ ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥ ५ ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥ ६ ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।

रामचंद्र के काज सँवारे ॥ १० ॥

लाय संजीवन लखन जियाए।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाए ॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १२ ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहां ते।
कवि कोबिद कहि सके कहां ते ॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हांक तें कांपै ॥ २३ ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु-संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्ट-सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन्ह जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम-जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अंतकाल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई।
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ ३७ ॥

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महासुख होई ॥ ३८ ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ ४० ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

श्री हनुमानजी की जय॥